रात्रि क्लास 29-5-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

यहां सभी बैठे हैं समझते हैं हम आत्मायें हैं बाप बैठा है। आत्म-अभिमानी हो बैठना इसको कहा जाता है। सभी नहीं ऐसे बैठे हैं। कि हम आत्मा हैं बाबा के सामने बैठे हैं। अभी बाबा ने याद दिलाया है स्मृति आवेगा। अटेन्शन देंगे। ऐसे बहुत हैं जिनकी ख्यालात बहार भागती हैं। यहां बैठे भी जैसे कान बन्द हैं। यह बुधि बाहर में कहां2 दोड़ती रहती है।। बच्चे बाप की याद में बैठे हैं? कमाई कर रहे हैं? कमाई उनकी होती है जो याद में बैठे हैं। बहुतों काबुधि योग बाहर में रहता है। वह जैसे यात्रा में नहीं हैं। टाईम वैस्ट होता है। बाबा को देखने से भी बाबा याद ~~ऋ~~ पड़ेंगे। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तो है ही। कोई कोई को एक्की टैम पड़ जाती है। हम आत्मायें हैं। हम थोड़े ही हैं। बाप नालेज फुल है तो बच्चों में भी नालेज ठहरी। अभी वापस जाना है। चक्र पूरा होता है। अभी पुरुषार्थ करना है। बहुत गई थोड़ी रही... इम्तहान के दिनों में बहुत ध्यान देते हैं। यहां भी जब समय नाजुक देखेंगे। असार देखते रहेंगे तो फिर पुरुषार्थ को लग पड़ेंगे। जोरसे याद करने लग पड़ेंगे। समझेंगे नहीं तो हम नापास हो जावेंगे। पद भी बहुत कमती हो जावेगा। यूं तो पुरुषार्थ चलता ही रहता है। देह ~~अभिमान~~ अभिमान कारण विकर्म होंगे। इसको सैगा डन्ड हो जाता है। क्योंकि हमारी निन्दा=~~कराते~~ कराते हैं। ऐसा कर्म न करना चाहिए जो बाप का नाम बदनाम हो। इसलिए गाते हैं सदगुरु के निन्दक ठौर न पाये। ठौर माना बादशाही। पढ़ाने वाला भी बाप है। और कहां भी सतसंग में एमआबजेक्ट होती नहीं सिवाय तुम्हारे। यह है तुम्हारा राजयोग। और कोई ऐसे मुख से कह न सके। हम राजयोग सिखलाते हैं। वह तो समझते हैं शान्ति में ही सुख है। वहां तो न सुख की बात न दुःख की बात है। शान्ति ही शान्ति ~~है~~ है। फिर समझा जाता है इनकी तकदीर कम है। सब से तकदीर ऊंची उनकी है जो सब से पहले2 पार्ट बजाने आते हैं। वहां उनको यह ज्ञान नहीं रहता। वहां सकंल्प नहीं चलेगा।

बच्चे जानते हैं हम सभी अवतार लेते हैं। ~~फिर2 नम्बरवार~~ आते हैं। यह ड्रामा है ना। हम आत्मायें शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। कैसे पार्ट बजाते हैं वह सारा राज़ बाप ही समझाते हैं। तुम बच्चों को अन्दर में आते ईन्द्रियां सुख रहता है। अन्दर में खुशी रहती हैं। कहेंगे यह देही ~~अ~~ अभिमानी है। बाप समझाते भी हैं तुम ~~स्टू~~ स्टुडेन्ट हो जानते हो हम देवता स्वर्ग के मालिक बनने वाले हैं। सिर्फ ~~हम~~ भी नहीं। हम विश्व के मालिक बनने वाले हैं। यह अवस्था ~~तब~~ तब रहेगी जब कर्मातीत अवस्था रहेगी। ड्रामा पलैन अनुसार होनी है जरूर। तुम समझते हो हम ईश्वरीय परिवार के हैं। स्वर्ग की बादशाही मिलनी है जरूर। जो सर्विस बहुत करेंगे उनको ही उंच पद मिलेगा। हम कम पद पावेंगे यह अन्दर में रहेगा। जो जास्ती सर्विस करते हैं बहुतों का कल्याण करते हैं तो जरूर उंच पद मिलेगा।

बाबा ने समझाया है यह योग की बैंक यहां हो सकती है। बाहर सैन्टर पर ऐसे नहीं कर सकते हैं। 4बजे आना निष्टा में बैठना है। नहीं। सैन्टर रहने वाले भल बैठे। बाहर वाले को भूले-चूके भी कहना नहीं है। समय बड़ा खराब है। यह यहां के लिए ठीक है। घर में ही बैठे हैं। वहां तो बाहर से आना पड़ता है। यह यहां के लिए है सिर्फ। बुधि में ज्ञान की धारणा होनी चाहिए। हम आत्मा हैं। उनका राज़ अलग तख्त है। हेर पड़ जानी चाहिए। हम भाई2 हैं। भाई2 से बात करते हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाशहो। बाप बच्चों को समझाते हैं जो समझते हैं और समझा सकते हैं वह सर्विस पर निकले रहो। धन दिये धन ना खूटे। यह अविनाशी ज्ञान रत्न है। भक्ति अलग है ज्ञान अलग है। ज्ञान एक ही बाप से मिलता है। भक्ति जन्म जन्मांतर की जाती है। बाप कहते हैं हम तो एक ही बार आते हैं सब की सदगति के लिए। यहां बच्चों को बहुत अच्छा चान्स है। डर की बात ही नहीं। कोई बन्धन नहीं। दुनिया में तो कितना हंगामा लगा पड़ा है। कितने असुर हैं। यहां तो डर की बात नहीं। कोई भी टाईम मुकर्रर कराओ बाप तो आ सकते हैं कहते हैं मैं हूं हुकुम का बन्दा। सभी को सदगति देने वाला। तुम ने हुकुम किया है हमें पतितपावन आओ कहते=है बाप ही यही डियुटी है। पतितों को पावन बनाना। वेद की धोबी हो गया। अच्छा बच्चों को समझना

::::::*